मत्स्य पालन में उद्यमिता

एक प्रक्रिया जिसमे व्यवसायी, लाभ कमाने हेतु किसी भी व्यावसायिक जोखिम को लेते हुए एक व्यावसायिक उद्यम को विकसित, व्यवस्थित तथा प्रबंधित करने की क्षमता और इच्छा रखता हो, उसे उद्यमिता कहते हैं । उद्यमिता एक साधारण शब्द नहीं अपितु आज के समय में एक वरदान से कम नहीं है । उद्यमिता किसी भी देश के अर्थ-व्यवस्था की नींव होती है । बेरोजगरी के इस वातावरण में, जहाँ लोग नौकरी के लिए लालाइत रहते हैं, वहां ये उद्यमिता आशा की एक किरण के रूप में प्रतीत होती है, जिसमे बेरोजगरी को दूर करने की अद्भुत क्षमता है । एक वयवसायी सैकड़ो लोगों को रोजगार प्रदान कर उनकी जिंदगी सवार सकता है, इसीलिए सरकार उद्यमिता को प्रोत्साहित करने और उसके विकाश के लिए प्रतिबद्ध है ।

उद्यमिता के अनेक क्षेत्र हैं, जिसमे में एक मत्स्य पालन भी है । मत्स्य पालन एक ऐसा व्यवसाय है, जिसमे कम लगत में अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है । मत्स्य पालन को कुटीर उद्योग के रूप में घर में टंकी बना के भी किया जा सकता है । तथा इसे बड़े स्तर पर आधुनिक तकनिकी का उपयोग कर बड़े उद्योग के रूप में भी विकसित किया जा सकता है । इन दिनों रंगीन मछलियों का पालन एक कुटीर उद्योग का रूप ले चुका है । विशेष कर गावँ की महिलाएँ इसमें रूचि ले रही हैं और आत्मनिर्भर बन रही हैं । देश के अनेक सरकारी संस्थान, गैर-सरकारी संस्थान और स्वयं सहायता समूह देश के नागरिको को मत्स्य पालन के प्रति जागरूक और इसका प्रशिक्षण देने का काम कर रही है । उनके इस प्रयास से मत्स्य पालन में अप्रतियासित वृद्धि हुई है ।

मत्स्य पालन में उद्यमिता का भविष्य बहुत ही उज्जवल है । इसका प्रमुख कारण है कि मछली की मांग देश में बहुत अधिक है, इसके आलावा मछली की मांग विदेशो में भी है । सरकार के अनेक प्रयासो के बावजूद भारत में मत्स्य पालन एक उद्योग के रूप में विकसित नहीं हो सका है । इसका मुख्य कारण देश में मत्स्य पालन के प्रति जागरूकता और जानकारी का आभाव है । मत्स्य पालन के अंतर्गत उद्यमिता के अनेक विकल्प हैं, जैसे;

1. **झींगा मछली का व्यवसाय:** भारत में झींगा मछली का कारोबार काफी फल-फूल रहा है। व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण प्रमुख झींगा मछली की प्रजाति में मैक्रोब्रेकियम रोज़नबर्गी, पिन्नेउस मोनोडॉन, पिन्नेउस भेनामी इत्यादि हैं । इसमें लागत राशि थोड़ा ज्यादा है और मुनाफा भी ज्यादा है। देश के अनेक राज्यों जैसे : आंध्र प्रदेश, केरल , तमिलनाडु , महाराष्ट्र , कर्णाटक में यह व्यवसाय काफी प्रचलित है । झींगा मछली का अंतर्राष्ट्रीय बाजार में काफी मांग है इसलिए झींगा मछली से बड़े व्यपारियों का लगाव बढ़ा है और कई स्थानों पर यह उद्योग का रूप लेने लगा है ।

2. **अन्तर्स्थलीय मछली का व्यवसाय:** भारत में अन्तर्स्थलीय मछली का बड़ा बाजार है । अन्य मछलियों की तरह इस मछली की यहाँ मांग और उत्पादन दोनों ही बहुत ज्यादा है। मेजर कार्प , माइनर कार्प , एक्सोटिक कार्प , कैट फिश इत्यादि व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण मछलियां हैं।
3. **समुद्री मछली का व्यवसाय**: समुद्री मछली का व्यवसाय समुद्री तट के निकटवर्ती क्षेत्र के लिए वरदान है। इस क्षेत्र के अधिकतर लोग इस वयवसाय से जुड़े होते हैं। इस क्षेत्र के अधिकतर लोगों की रोजी-रोटी इस व्यवसाय से जुड़ी होता है। व्यावसायिक समुद्री मछलियो में टूना, मैकेरल, आयल सार्डिन, भेटकी, रवास , सुरमई , अनकोभी इत्यादि प्रमुख है।
4. **रंगीन मछली का उत्पादन और विपणन:** रंगीन मछली का व्यवसाय आज के समय में काफी फल-फूल रहा है। बीते कुछ सालों में इस मछली की मांग बाजार में तेजी से बढ़ी है। लोग अपने घर, दफ्तर, दुकान ,होटल, रेस्टुरेंट इत्यादि जगहों पर रंगीन मछली रखना पसंद करते हैं। इन मछलियों के बढ़ते हुए मांग को देखते हुए लोगों ने इसका व्यववयाय शुरू कर दिया है ,जो कि काफी मुनाफेदार है। इस व्यवसाय कि खास बात ये है कि इसे घर में छोटे छोटे टैंक बना के भी किया जा सकता है। भारत में महिलाओ के लिए ये एक अच्छा अवसर प्रदान करता है। बहुत सारे गावो में यह व्यवसाय एक कुटीर उद्योग का रूप ले चुक है। आने वाले दिनों में, लोगों के शौक बढ़ने के साथ इस कारोबार में और अधिक वृद्धि कि सम्भावना है।
5. **मत्स्य प्रसंस्करण आधारित व्यवसाय:** लोगों के भोजन के आदत में बदलाव के साथ, भोज्य पदार्थो के कारोबार में भी बदलाव आ रहा है। आज के दौर में लोगों के भोजन में प्रसंस्कृत पदार्थ के मात्रा बढ़ी है। मछली से भी अनेक प्रकार के प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ बनाये जाते हैं, जैसे : फिश कटलेट , फिश फिंगर, फिश पनीर , मछली का आचार, किण्वित मछली (फर्मेन्टेड फिश), सुरमई इत्यादि।हालांकि ये पदार्थ अभी भारत में ज्यादा प्रचलित नहीं है लेकिन इसका सेबन दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। आने वाले दिनों में इसकी मांग बढ़ने के साथ इसका व्यवसाय भी बढ़ने कि सम्भाबना है।
6. **मत्स्य बीज उत्पादन और विपणन:** मत्स्य पालन में अच्छे किस्म के मत्स्य बीज का होना बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए अच्छे किस्म के मत्स्य बीज का मांग बहुत अधिक है। मत्स्य बीज का उत्पादन और उसका विपणन एक बहुत ही लाभदायक व्यवसाय है। इस व्यवसाय में कम समय में काफी अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। इस व्यवसाय में थोड़ा प्रशिक्षण कि जरुरत होती है। अनेक सरकारी और गैर सरकारी संसथान किसानो को प्रशिक्षित करने का काम कर रहे हैं। हैचरी के निर्माण के लिए सरकार वित्तीय मदद भी कर रही है।
7. **मत्स्य फीड उत्पादन और विपणन:** मछलियां के अच्छी वृद्धि के लिए अनेक तरह के फीड का उपयोग किया जाता है। कुछ फीड हमें कृषि उत्पाद से प्राप्त होती है, जैसे : आयल केक, राइस ब्रान इत्यादि तो कुछ कृत्रिम तरीके से तैयार किये जाते हैं। मत्स्य पालन में वृद्धि के साथ

फिश फीड का मांग भी बढ़ रही है। अतः फिश फीड का उत्पादन और विपणन एक व्यवसाय बन चूका है। बहुत से आर्टिफीसियल फीड उद्योग में बड़े स्तर पर तैयार किये जा रहे हैं।

8. **मछलियाँ का एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट सम्बंधित व्यवसाय:** मछलियां का एक बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार है। अतः मछलियां का इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट का व्यवसाय काफी फल-फूल रहा है। देश के बहुत सारे लोग इस व्यवसाय से जुड़े हैं।
9. **मछली के बाय-प्रोडक्ट सम्बंधित व्यवसाय:** मछली के प्रसंस्करण के दौरान मछली के कुछ अवशेष बच जाते है, जिसे बाय -प्रोडक्ट कहते हैं। मछली के इसी बाय-प्रोडक्ट का उपयोग अनेक कामो में किया जाता है। इस बाय -प्रोडक्ट से सम्बंधित कारोबार भी कई जगहों में किया जाता है।
10. **सी-वीड (समुद्री घास) सम्बंधित व्यवसाय:** सी-वीड समुद्र में पाए जाने वाला एक प्रकार का खरपतवार है। इसका अनेक इंडस्ट्रीज में उर्वरक के रूप में उपयोग किया जाता है। इसके अलावे इसका उपयोग मनुष्यों और पशुओ के खाद्य पदार्थ के रूप में भी होता है। सी- वीड का व्यवसाय दक्षिणी भारत के कुछ जगहों पर काफी प्रचलित है।

अतः मत्स्य पालन में उद्यमिता की बहुत सम्भावनाये है, जरुरत है तो सिर्फ लोगों को जागरूक बनाने की। सरकार ने मत्स्य पालन को कुटीर उद्योग के रूप में विकसित करने के अनेक प्रयास किये हैं, जिसमे सब्सिडी भी एक कदम है। लेकिन अनेक अध्यनो से पता चला है कि मत्स्य पालन के विकास में सब्सिडी बहुत कारगर नहीं है अतः सब्सिडी में दिए जा रहे वित्तीय मदद को दूसरे कामों, जैसे: लोगों को मत्यपालन के प्रति जागरूक करने, मछली बाजार का आधुनिकरण करने, मत्स्य प्रसंस्करण इकाई स्थापित करने और उन्नत किस्म के मत्स्य बीज उपलब्ध करने में लगाया जा सकता है।

रवि शंकर कुमार
सहायक प्राध्यापक,
मात्स्यिकी महाविद्यालय,
अर्राबाड़ी, किशनगंज